दया और प्रेम के गौरवमयी 100 साल

अजायब बानी

मासिक पत्रिका

मार्च-2026

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

RNI No - RAJHIN/2003/9899

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष–तेइसवां | अंक–ग्यारहवां | मार्च–2026

2 शब्द
तेरे नाम दा भरोसा भारी

3 सतसंग- परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
परमात्मा की भक्ति

13 परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब
सवाल–जवाब

25 परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से
लोभी आदमी

27 परम सन्त अजायब सिंह जी द्वारा प्रेमियों को अभ्यास में बिठाने से पहले
परमात्मा का प्यार

30 परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा भजन गाने पर दिया संदेश
नम्र होने का मौका

32 परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से
होली का प्रसाद, धन्य अजायब

प्रकाशक : **सन्तबानी आश्रम** 16 पी.एस. रायसिंह नगर–335 039 जिला–श्री गंगानगर (राजस्थान)
विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया** 96 67 23 33 04, 99 28 92 53 04
संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा** 99 50 55 66 71 उप संपादक : **नन्दनी**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 288 Website : www.ajaibbani.org
RSG-01, V.I.P. Colony, Ridhi-Sidhi Enclave Ist, Sri Ganganagar - 335 001 (Rajasthan)

तेरे नाम दा भरोसा भारी

तेरे नाम दा भरोसा भारी, रक्खीं लाज प्यारेयां दी, X 2
रक्खीं लाज प्यारेयां दी, रक्खीं लाज प्यारेयां दी,
तेरे नाम दा .....

1. नाम जपो जी ऐसे–ऐसे, ध्रुव प्रह्लाद जपयो हर जैसे, X 2
ध्रुव प्रहलाद जपयो हर जैसे,
रक्खीं लाज .....

2. दीन दयाल भरोसे तेरे, सब परिवार चढ़ायो बेड़े, X 2
सब परिवार चढ़ायो बेड़े,
रक्खीं लाज .....

3. जां तिस भावे तां हुक्म मनावे, इस बेड़े को पार लंघावे, X 2
इस बेड़े को पार लंघावे,
रक्खीं लाज .....

4. गुरु प्रसाद ऐसी बुद्ध समानी, चूक गई फिर आवन–जानी, X 2
चूक गई फिर आवन–जानी,
रक्खीं लाज .....

5. कहो 'कबीर' भज सारंग पानी, उरवार पार सब एको दानी, X 2
उरवार पार सब एको दानी,
रक्खीं लाज .....

सतसंग- परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

परमात्मा की भक्ति

DVD-533(1)

27 सितम्बर 1987 गुरु रामदास जी की बानी 16 पी.एस.आश्रम, राजस्थान

आपके आगे गुरु रामदास जी महाराज की बानी रखी जा रही है, आप अपने मन से ही बात कर रहे हैं, हमें पता ही है कि हर एक के अंदर संकल्प–विकल्प उठ रहे हैं। कई बार अंदर से ही हमारा मन सवाल उठाता है और मन ही आगे से जवाब दे देता है। इसी तरह आप मुक्ति के साधन के बारे में सोच रहे थे कि मुक्ति जप–तप या पूजा–पाठ से मिलती है या तीर्थों की यात्रा कर ने से मिलती है।

सारे ही महात्मा संसार में आकर अपना तजुर्बा बताते हैं, जो उन्होंने अपनी जिंदगी में हासिल किया होता है, वे सुना–सुनाया नहीं कहते। आप अपना तजुर्बा बयान करते हैं अगर मुक्ति का साधन या परमात्मा से मिलने का सही तरीका है तो वह 'शब्द–नाम' की कमाई है।

जपि मन हरि हरि नामु तरावैगो।। जपि मन हरि हरि नामु तरावैगो।।
जो जो जपै सोई गति पावै जिउ ध्रू प्रहिलादु समावैगो।।

आप प्यार से कहते हैं कि किसी कौम या जाति का सवाल नहीं, औरत या मर्द का सवाल नहीं, बूढ़े या जवान का सवाल नहीं, जो भी भाग्यशाली 'शब्द–नाम' की कमाई करेगा, वह तर सकता है।

ध्रुव छोटी उम्र का लड़का था, इतिहास में ध्रुव की उम्र पाँच साल लिखी है। उसके पिता की दो शादियां थी। ध्रुव हँसता हुआ बाहर से आया और अपने पिता की गोद में बैठ गया। उसकी सौतेली माँ को गुस्सा आया, उसने ध्रुव की बाँह पकड़कर उसे पिता की गोद से उठा दिया और कहने लगी, ''अगर तूने राजा की गोद में बैठना था तो मेरे पेट से जन्म लेता।'' ध्रुव ने उदास होकर अपनी माता से पूछा, ''माता, तू राजा की रानी है या गोली है?'' उसकी माता ने कहा, ''बेटा, मैं हूँ तो रानी लेकिन मैंने पूर्वले कर्म अच्छे नहीं किए इसलिए राजा ने और शादी करवा ली और मैं गोलियों जैसा जीवन बिता रही हूँ।'' ध्रुव ने अपनी माता से पूछा, ''आज मुझे जो शत्रु दिखाई दे रहे हैं, क्या ये मित्र बन सकते हैं?'' माता ने कहा, ''हाँ बेटा अगर **परमात्मा की भक्ति** करें तभी ये मित्र बन सकते हैं।'' ध्रुव की छोटी उम्र थी, उसके मन में उदासी आई, वैराग्य पैदा हुआ और वह तप करने के लिए जंगल में चला गया।

हमारे सतगुरु महाराज कृपाल कहा करते थे, ''भूखे को रोटी और प्यासे को पानी कुदरत का उसूल है, जरूर मिलता है।'' ध्रुव की सच्ची तड़प को देखकर नारद मुनि ने सोचा कि नाम लिए बिना, गुरु के बिना अगर यह भक्ति करने जाएगा तो राम इसे ठुकरा देंगे, इसके दिल में अभाव आ जाएगा। नारद ने जाकर ध्रुव को उपदेश दिया और कहा, ''बेटा, तू छोटा सा बच्चा है, इस तरफ क्यों लग रहा है?'' ध्रुव का दृढ़विश्वास देखकर नारद मुनि ने ध्रुव को नाम के रास्ते पर डाल दिया, ध्रुव ने बहुत

कमाई की। राजा को पता चला तो राजा ने ध्रुव से जाकर कहा, ''बेटा, तू राज कर मैं भक्ति करता हूँ।'' ध्रुव ने कहा, ''अब मुझे इस राज की जरूरत नहीं मुझे सच्चखंड का सच्चा राज मिल गया है।'' ध्रुव ने छोटी उम्र में **परमात्मा की भक्ति** की और उसे परमात्मा मिल गए।

राजा हिरण्यकश्यप मुल्तान में हुआ है जो आजकल पाकिस्तान में है, मुल्तान उसकी राजधानी थी। हिरण्यकश्यप बहुत अहंकारी था, उसने पब्लिक में अपने ही नाम का डंका बजाया हुआ था कि परमात्मा का नहीं मेरा नाम जपें, मैं ही आपको मुक्ति दे सकता हूँ। उसने किताबों में परमात्मा की तरह अपनी महिमा लिखवाई हुई थी। सुबह स्कूल में जो प्रार्थनाएं होती थी, वे हिरण्यकश्यप का नाम लेकर की जाती थी। हिरण्यकश्यप के घर प्रह्लाद पैदा हुआ। प्रह्लाद जब प्रार्थना करने लगा तो अंदर से आत्मा को जाग आई कि परमात्मा कोई और है। प्रह्लाद, राम–राम कहकर हाथ बजाने लगा कि परमात्मा कोई और है। टीचर ने जाकर हिरण्यकश्यप से कहा कि आपका बच्चा बिगड़ा हुआ है और बच्चों को भी बिगाड़ रहा है, हमारी बात नहीं मानता और राम–राम कहकर ताली बजाता है।

हिरण्यकश्यप ने प्रह्लाद को बुलाकर समझाया लेकिन वह नहीं समझा तो उसे सजा देनी शुरु की। उसे पहाड़ी से गिरा दिया, राजा तलवार लेकर उसे काटने लगा, अग्नि में भी उसकी परीक्षा की गई लेकिन परमात्मा ने हर जगह प्रह्लाद की रक्षा की। आखिर खंबे को तपा दिया कि अगर तेरा राम है तो तुझे रख ले, तू इस खंबे के साथ लिपट जा। प्रह्लाद छोटी उम्र का था, परमात्मा जल–थल में रखने वाला है, वह कीड़ी का रूप धारण करके उस खंबे के ऊपर चल रहा था। प्रह्लाद के अंदर मजबूती आई कि जब एक चींटी खंबे के ऊपर चलते हुए नहीं जल रही तो मैं कैसे जल सकता हूँ। वह भागकर खंबे के साथ लिपट गया, खंबा ठंडा हो गया।

हिरण्यकश्यप ने देवी–देवताओं को खुश करके इस तरह के वर लिए हुए थे कि मुझे न कोई आदमी मारे न कोई औरत मारे, न कोई शस्त्र ही मुझे काट सके। मैं न दिन में मरुं, न रात को मरूं। परमात्मा नरसिंह रूप में प्रकट हुए, वे न आदमी थे न शेर थे, उस समय न दिन छिपा हुआ था न चढ़ा हुआ था। उन्होंने हिरण्यकश्यप को पकड़कर नाखूनों से उसका पेट फाड़ दिया। मुल्तान में वह यादगार बहुत लोगों ने देखी है, वहाँ वह खंबा फटा हुआ है। कहने का भाव वह इतना अंहकारी था।

जिस तरह माता को पुत्र प्यारे होते हैं उसी तरह परमात्मा को अपने भक्त प्यारे होते हैं। परमात्मा ने छोटे से भक्त की रक्षा की। यहाँ गुरु रामदास जी महाराज उन दोनों की मिसाल देते हैं कि उन दोनों ने **परमात्मा की भक्ति** की, परमात्मा ने उनकी रक्षा की। बानी में आता हैः

हरणाखसु दुसटु हरि मारिआ प्रहलादु तराइआ।।

कृपा कृपा कृपा करि हरि जीउ करि किरपा नामि लगावैगो।।
करि किरपा सतिगुरु मिलावहु मिलि सतिगुर नामु धिआवैगो।।

अब ख्याल पैदा होता है कि जब **परमात्मा की भक्ति** करके ही तरना है तो हर एक के अंदर चाव पैदा होता है कि मैं भी भक्त बन जाउं लेकिन इसमें हमारे पूर्वले कर्मों का बहुत साथ होता है। पूर्वले कर्म अच्छे हों तभी हम भक्ति की तरफ लगते हैं। जिन महात्माओं की आँखें खुली हैं वे हमेशा ही अपने गुरु के आगे ऋणी हो जाते हैं, वे गुरु को ही कुलमालिक समझते हैं। उन्हें पता है कि परमात्मा कृपा करते हैं तो हमें गुरु के पास लेकर जाते हैं, गुरु के साथ मिलाप करवाते हैं अगर गुरु कृपा करते हैं तो वे हमें 'शब्द–नाम' के साथ जोड़ देते हैं। कबीर साहब कहते हैंः

कबीर सेवा कउ दुइ भले एकु संतु इकु रामु।।
रामु जु दाता मुकति को संतु जपावै नामु।।

जनम जनम की हउमै मलु लागी मिलि संगति मलु लहि जावैगो।।
जिउ लोहा तरिओ संगि कासट लगि सबदि गुरु हरि पावैगो।।

हमारे मन को जन्म–जन्मांतर से मैल लगी हुई है, यह काला हो गया है। हमारे और परमात्मा के दरमियान अहंकार का ही पर्दा है। नाम की कमाई करने से हमारे अंदर से अहंकार का पर्दा दूर हो जाता है। सतगुरु हमें नाम बख्श देते हैं, शब्द का भेद देते हैं। 'शब्द–नाम' की कमाई करके हम इस तरह तर जाते हैं जैसे काठ की संगत करके लोहा तर जाता है अगर हम सुई को पानी में फैंके तो वह समुंद्र की तह में बैठ जाती है लेकिन काठ के साथ हम जितना भी लोहा लगा दें, वह तर जाता है। इसी तरह हमने कितने भी खोटे कर्म क्यों न किए हों अगर हम वह सब छोड़कर सन्तों की शरण में आकर नाम की कमाई करते हैं तो हमारे सारे पाप खत्म हो जाते हैं, परमात्मा हमें अपने चरणों में जगह दे देते हैं।

संगति संत मिलहु सतसंगति मिलि संगति हरि रसु आवैगो।।
बिनु संगति करम करै अभिमानी कढि पाणी चीकड़ु पावैगो।।

महात्मा संसार में आकर सदा ही सतसंग जारी करते हैं, सतसंग पर बहुत जोर देते हैं। हमारी आत्मा परमात्मा से बिछुड़कर जैसी संगत करती आई है, यह वैसा ही फल खाती आई है। महात्मा हमें बताते हैं कि हमारे ऊपर अच्छी संगत का अच्छा रंग चढ़ता है और हम बुरी संगत का बुरा फल खाते हैं। कबीर साहब कहते हैंः

उज्जल बूँद अकास की, परिगई भूमि बिकार।

स्वाति बूँद कल्लर की धरती पर पड़कर बेकार चली जाती है अगर स्वाति बूँद केले में पड़ जाए तो कपूर बन जाता है। अगर बाँस में पड़ जाए तो उसकी तवाशीर बन जाती है। अगर वही बूँद गीदड़ के मुँह में पड़ जाए तो गीदड़ हलक जाता है अगर सिप्पी में पड़ जाए तो मोती बन जाता है,

उसे जैसी संगत मिलती है वह वैसा ही गुण अख्तियार करती है अगर स्वाति बूँद पपीहे के मुँह में पड़ जाए तो पपीहे को साल भर प्यास नहीं लगती। अगर साँप के मुँह में पड़ जाए तो जहर बन जाती है। इसी तरह हमारी आत्मा जैसी संगत करती है, यह वैसा ही फल भोगती है। सन्त–महात्मा सदा ही मालिक के प्यारों की संगत में जाने का उपदेश करते हैं।

हमारे सतगुरु महाराज कृपाल सदा ही संगत पर जोर दिया करते थे, ''आप सौ काम छोड़कर सतसंग में जाएं, हजार काम छोड़कर अभ्यास में बैठें।'' गुरु रामदास जी महाराज प्यार से कहते हैं अगर हम नाम की कमाई नहीं करते तो जप–तप, पूजा–पाठ, तीर्थों की यात्रा करना इस तरह हैं जिस तरह साफ पानी को निकालकर कीचड़ में डाल रहे हैं। चाहे बाहर मुखी जितने भी अच्छे कर्म करते हैं, उनका अहंकार होना कुदरती है कि हमने इतना दान–पुण्य किया है या हमने फलाने आदमी की मदद की है या हमने इतना जप–तप कर लिया है या हम इतने तीर्थों की यात्रा कर आए हैं। इससे स्वाभाविक ही हमारे अंदर अहंकार आ जाता है। अहंकार के लिए महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जैसे हम पुलाव बनाकर उसके ऊपर धूड़ डाल लेते हैं।''

भगत जना के हरि रखवारे जन हरि रसु मीठ लगावैगो।।
खिनु खिनु नामु देइ वडिआई सतिगुर उपदेसि समावैगो।।

जिस तरह माता दिल लगाकर अपने बच्चे की देखभाल करती है कि बच्चा नासमझ है, उसे पता नहीं कि आग में हाथ डालना है या नहीं। इसी तरह परमात्मा हर समय अपने भक्तों की रक्षा करते हैं। उन्हें फिक्र है कि किस तरह मैंने अपने बच्चों की रक्षा करनी है कि इनका दुख में फायदा है या सुख में, बड़ाई करवाने में फायदा है या ख्वारी करवाने में फायदा है, वे सब कुछ जानते हैं। जब तक हमारी आँखें नहीं खुलती हम तब तक ही चिल्लाते हैं। जब हम नाम जपते हैं तो वह हमें परमात्मा के साथ मिलवा

देते हैं, परमात्मा हमें बड़ाई देते हैं। सबसे बड़ी बड़ाई यह है कि परमात्मा हमारे लिए अपना दरवाजा खोल देते हैं और हमें अपने साथ मिला लेते हैं।

सन्त–महात्मा कुदरत के नियमों के मुताबिक ही इस संसार में अपना जीवन व्यतीत करते हैं और अपने सेवकों को भी यही हिदायत करते हैं। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि जो आदमी यह कहते हैं कि मेरा लड़का बीमार है, मेरी पत्नी बीमार है इसे राजी करें, बेरोजगारी दूर करें, मुकदमा फतेह करें। ऐसे सेवक आज नहीं तो कल गिर जाएंगे क्योंकि सन्त–महात्माओं का काम तो नाम जपवाना और मालिक के साथ मिलवाना होता है। ये सुख–दुख, बीमारी तो हम अपने पिछले कर्मों की वजह से भोग रहे होते हैं और कई परेशानियां हम खुद भी खड़ी कर लेते हैं। सन्त–महात्मा कहते हैं कि प्यारेयो, इन्हें प्यार से भोगने में ही फायदा है। स्वामी जी महाराज कहते हैंः

दुख की घड़ी गनीमत जानों सुख में रहत सदा मन गाफिल।

दुख के समय मन का झुकाव परमात्मा की तरफ होता है, यह सुख में आलस करता है अगर कोई सख्त वक्त होता है तो आपको उस समय का फायदा उठाना चाहिए। बच्चा बीमारी से दुखी है, माता सदा ही उसकी बेहतरी सोचती है कोई भी माता अपने बच्चे को दुखी देखकर खुश नहीं होती। बच्चे की बेहतरी के लिए माता उसे कड़वी दवाई भी खिलाती है लेकिन बच्चे को पता नहीं कि मेरी इसमें कितनी बेहतरी है। बच्चा चीखता–चिल्लाता है और डाक्टर से भी दूर होने के लिए कहता है, डाक्टर भी उसकी बेहतरी सोचता है। इसी तरह सतगुरु जिन्होंने हमें नाम दिया है वे गाफिल नहीं वे भी हमारी बेहतरी सोचते हैं और हर समय अपने सेवक की मुनासिब मदद करते हैं।

भगत जना कउ सदा निवि रहीअै जन निवहि ता फल गुन पावैगो।।
जो निंदा दुसट करहि भगता की हरनाखस जिउ पचि जावैगो।।

आप प्यार से कहते हैं कि क्या हम सन्त–महात्माओं से किसी चतुराई से फायदा उठा सकते हैं, धन–दौलत से फायदा उठा सकते हैं या हुकूमत से फायदा उठा सकते हैं? आप कहते हैं कि मालिक को नम्रता प्यारी है।

गुरु नानक साहब कहते हैं अगर हम मालिक के प्यारो को 'जी' भी कहते हैं तब भी हम यमों की तलब से बच जाते हैं। जो लोग उन मालिक के प्यारों की निन्दा करते हैं, उन्हें भला–बुरा कहते हैं, जिस तरह हिरण्यकश्यप का हाल था उसी तरह निन्दक को परमात्मा के दरबार में दाखिल नहीं करते।

ब्रहम कमल पुतु मीन बिआसा तपु तापन पूज करावैगो।।
जो जो भगत होइ सो पूजहु भरमन भरमु चुकावैगो।।

गुरु रामदास जी महाराज कहते हैं कि आप यह न सोचें कि यह भक्त किस जाति या किस मुल्क का है, आप भक्त से फायदा उठा सकते हैं। ब्रह्मा कमल से पैदा हुए थे। व्यास देव मछोदरी से पैदा हुए थे। व्यास देव ने भक्ति की वह हिन्दुस्तान में काफी पूजे गए और आज भी हम प्यार से उनका नाम लेते हैं कि वे बहुत अच्छे सन्त–महात्मा थे।

जात नजाति देखि मत भरमहु सुक जनक पगीं लगि धिआवैगो।।
जूठन जूठ पई सिर ऊपरि खिनु मनूआ तिलु न डुलावैगो।।

हिन्दुस्तान में आज भी जाति–पाति का रिवाज है लेकिन जिस वक्त यह बानी लिखी गई थी उस वक्त तो बहुत ही छूतछात थी। सुखदेव मुनि ब्राह्मण के लड़के थे और राजा जनक क्षत्रिय थे। उस समय एक ब्राह्मण का क्षत्रिय को गुरु धारण करना बहुत ही मुश्किल था लेकिन प्यार प्यार ही होता है, तड़प तड़प ही होती है। जब सुखदेव मुनि राजा जनक के पास गए तो राजा जनक ने उनकी परीक्षा ली, उन्हें अंदर नहीं आने दिया बाहर ही खड़ा कर दिया।

उस वक्त कुछ ऋषि–मुनियों को न्यौता दिया गया कि आज हमारे घर खाना है। जब सबने खाना खा लिया तो जहाँ सुखदेव मुनि खड़े थे, जूठी पत्तले उनके सिर के ऊपर डाली कि इन्हें अभी भी जाति का अहंकार है। तड़प तड़प ही होती है। सुखदेव ने अपने मन को डोलने नहीं दिया कि मैं ब्राह्मण हूँ, मेरे सिर में जूठ पड़ रही है, सुखदेव मुनि खुश हो रहे थे। सुखदेव मुनि को नाम लेने का शौंक था कि किसी भी तरह यह मुझे नाम दे दे, अहंकारी मन का यही इलाज होता है। ।

राजा जनक के अंदर बहुत नम्रता थी, नम्रता करने वाला ही सब कुछ प्राप्त करता है। राजा जनक ने ऋषियों–मुनियों की धूड़ी उठाकर अपने माथे पर लगाई कि ये पवित्र आत्माओं के पवित्र पैरों की धूड़ी है। सन्तों की धूड़ी की कद्र वही करता है जो अंदर जाता है। उसे पता है कि यह कितने पवित्र हैं। इस धूड़ी को ब्रह्मा, विष्णु, शिव जैसे देवता भी लोचते रहे लेकिन उन्हें यह धूड़ी नसीब नहीं हुई। हमारे ऊँचे भाग्य हैं कि हमें कलयुग में ऐसे महात्मा मिले जिनके चरणों से लगी हुई धूड़ी पवित्र थी।

मैं बताया करता हूँ कि जब परमात्मा कृपाल मेरे घर आए, मैंने नजर बचाकर उनके पैरों की धूड़ी उठा ली। सन्तों की आँखें हर तरफ होती हैं बेशक वे अपनी मौज में किसी को कुछ न कहें। महाराज कृपाल ने कहा, ''हाँ भई, तू यह क्या कर रहा है?'' मुझे पहले से ही कविता बोलने की आदत थी, मैंने कहाः

तेरी सजरी पैड़ दा रेता, चुक–चुक ला लां हिक नूं।
प्यारेया तेरे पंज शब्दा ने मैंनू तारेया।।

जनक जनक बैठे सिंघासनि नउ मुनी धूरि लै लावैगो।।
नानक कृपा कृपा करि ठाकुर मै दासनि दास करावैगो।।

आप परमात्मा के आगे फरियाद करते हैं कि हे परमात्मा, तू कृपा कर दया कर मुझे अपने दासों का दास, प्यारों का प्यारा बनाए रखना।***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

सवाल–जवाब

अहमदाबाद

12 सितम्बर 1994

एक प्रेमी: *बहुत प्यारे सन्तजी, मैं जब सेवा करता हूँ तो काम में इतना ज्यादा मस्त हो जाता हूँ कि मैं ज्यादा सिमरन नहीं कर पाता। प्यार से सेवा करने की कोशिश के बावजूद भी अहंकार मुझ पर हावी हो जाता है। हम किस तरह अपने काम पर यकीन करते हुए बिना अहंकार के सन्तों की शिक्षा के अनुसार सेवा कर सकते हैं?*

बाबा जी: सबसे पहले परमात्मा सावन–कृपाल के चरणों में नमस्कार है, जिन्होंने हमें अपनी याद में बैठने का और यश करने का मौका दिया है। गुरु नानकदेव जी ने कहा था कि कोई भी काम शुरु करने से पहले गुरु से इजाजत लेना बहुत जरूरी है:

कीता लोड़ीऐ कंमु सु हरि पहि आखीऐ।।
कारजु देइ सवारि सतिगुर सचु साखीऐ।।

हाँ भई, मैंने सुबह अभ्यास के समय बताया था कि परमात्मा हम सबके अंदर है। परमात्मा पर्वत जितना विशाल है लेकिन हमारे अहंकार और भ्रम की दीवार के पीछे छिपा हुआ है। सिमरन ही हमारे अंदर नम्रता लेकर आता है और सिमरन ही हमारे अंदर सेवा करने का उत्साह पैदा करता है अगर सिमरन करेंगे तो गुरु के साथ प्यार भी जागता है। अगर आप सिमरन नहीं करेंगे तो मन ने आराम से नहीं बैठना, यह आपके अंदर कोई न कोई भ्रम पैदा करेगा, अहंकार पैदा करेगा कि ये सब मेरी वाह–वाह करें अगर वाह–वाह नहीं होती तो मन कई बार सेवा छोड़कर भी बैठ जाता है कि जब तेरी सेवा की कद्र नहीं तो तू सेवा क्यों करता है?

सन्तमत में हमें सबसे पहले नम्रता सिखाई जाती है। महाराज जी कहा करते थे, ''अगर हमारा प्याला खाली है तभी सुराही झुकेगी अगर प्याला पहले ही भरा हुआ है तो सुराही कैसे झुकेगी?'' महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि कई बार हमारा मन ऐसा ढोंग रचता है कि बाहर से नम्रता दिखानी शुरु करता है और अंदर से मान ही मान चाहता है। यह अपने आपसे और पब्लिक के साथ भी एक धोखा है कि अंदर से मान चाहना और बाहर से नम्रता दिखाना कि मैं तो किसी काम का नहीं जो कुछ करवाते हैं गुरु ही करवाते हैं।

प्यारेयो, हमें हमारा मन धोखे में रख रहा है क्यों न मन से सिमरन किया जाए। चाहे कोई तन, मन, धन या सुरत–शब्द की सेवा करता है, ये चारों सेवाएं अपनी–अपनी जगह पर महानता रखती हैं। हम सतसंगियों को किसी न किसी सेवा में लगे रहना चाहिए लेकिन इसके साथ सन्तों ने भजन–सिमरन करना भी बहुत जरूरी रखा है। भजन मुख्य है और हर सतसंगी को भजन मुख्य रखना चाहिए।

काफी साल पहले की बात है कि उस समय हमारे इलाके में महाराज सावन सिंह जी के सिर्फ ग्यारह सतसंगी थे, जिसमें से मुझे नाम नहीं मिला था, उन दसों को नाम मिला हुआ था। महाराज सावन सिंह जी के प्रति मेरी श्रद्धा और प्यार बचपन से रहे हैं, जब से उनके दर्शन हुए हैं तब से मेरी श्रद्धा बहुत अटूट थी।

हमने वहाँ सतसंग के लिए एक महात्मा को बुलाया, उसके लिए किराए की जगह ली, जो भी खर्च होता वह हम सब मिलकर प्रेम–प्यार से इकट्ठा कर लेते थे। उस महात्मा ने रोज लोगों के घर में खाना शुरु कर दिया। वह अच्छे–अच्छे खाने खाकर सो जाता और कहता कि मैं तो सेवादार हूँ। एक दिन सतसंग हुआ उस सतसंग में कई समाजों के बेसतसंगी भी आए हुए थे। हिन्दुस्तान में रिवाज है कि घर के लोग चाय–पानी जरूर करते

हैं, उन्होंने चाय वगैरह तैयार की और सोचा कि बाबा को अंदर बिठाकर चाय पिलाएंगे, आदर करेंगे और साथ ही बातचीत करेंगे। पहले संगत के आगे चाय के गिलास लाकर रख दिए। बाबा गिरगिट की तरह रंग बदलने लगा कि मैं सबसे बड़ा था, पहले चाय पीने का मेरा हक था। इनके लिए पहले चाय क्यों ले आए हैं, आखिर वह काला–पीला हो रहा था।

गृहस्थी लोग सदा ही महात्मा से डरते हैं कि कहीं बद्दुआ न दे दें। जब बाबा नहीं उठा तो उन्होंने डरते हुए धीरे से चाय लाकर बाबा के सामने रख दी। बाबा ने सिर पर पगड़ी पहन रखी थी, उसने पगड़ी उतारकर सिर नंगा कर दिया और कहा, ''चाय मेरे सिर में डाल दें।'' वहाँ जो समाज के लोग आए थे, वे हाथ के ऊपर हाथ मारकर उठ गए कि इन राधास्वामियों का सन्त बहुत अच्छा है, उसके बाद वे लोग सतसंग में आने से हट गए।

मेरे कहने का भाव है अगर वह महात्मा भजन–सिमरन भी करता होता तो यह मामूली सी बात मजाक का विषय न बनती। गुरमेल की बेटी सुखपाल को बहुत से प्रेमी जानते हैं। उसने सतसंग में यह कहानी मुझसे पहले भी सुनी थी, वह बोलती–बोलती कहती है कि यह अपने बाबा जी नहीं यह कोई और बाबा हैं।

मेरे कहने का भाव है कि कई बार हम भजन–सिमरन के बिना भी सेवा करते हैं तो यह हमारा मजाक भी करवा देती है। मुझे खुशी है कि अब तो हमारे सतसंगी लोग बाहर पश्चिम में प्रेमियों के खाने–पीने का इंतजाम कर लेते हैं। अब तो संगत काफी बढ़ चुकी है मुझे किसी के घर जाने का मौका नहीं मिलता।

मैं जब पहले टूर पर पश्चिम में गया तो उस समय एक परिवार के लोगों ने मुझे अपने घर बुलाया। पप्पू हिन्दुस्तान के रिवाज के मुताबिक कहने लगा कि चाय–पानी वहीं पिएंगे। इसने सोचा कि वहाँ काफी कुछ खाने को मिलेगा, यहाँ न ही खाएं भूखे चलें। आगे हम उनके घर गए, कार से उतरे ही थे तो उन्होंने कहा, ''हैलो मिस्टर पप्पू।'' बस हाथ मिलाया और हम वापिस आ गए। पप्पू ने मुझसे कहा कि इन्होंने हमें खाने के लिए कुछ भी नहीं दिया। मैंने कहा कि हम वहाँ बैठे नहीं इसलिए उन्होंने कुछ खाने के लिए नहीं दिया। इसे धीरे–धीरे रिवाज का पता लगा। प्यारेयो, जहाँ आप सेवा करने का उद्यम करते हैं, आपने हाथ से सेवा करनी है आपका मन खाली है। महाराज सावन का वाक याद रखें:

हथ कार वन्नी, दिल यार वन्नी।

एक प्रेमी: *हम जानते हैं कि हमें गुरु से कुछ भी नहीं माँगना चाहिए क्योंकि गुरु हमारी जरूरतों को जानते हैं। वे हमारी और हमारे प्यारों की देखभाल करते हैं तो क्या अपने परिवार के लिए आर्शिवाद माँगना कोई गलती है?*

बाबा जी: हाँ भई, आर्शिवाद माँगना गलत नहीं, यह एक नम्रता है, प्यार है लेकिन हम जो संसारिक वस्तुएं माँगते हैं, उनके बारे में हमें पता नहीं कि हमें उससे सुख मिलना है या दुख मिलना है। हम जीव वक्त का ही देखते हैं कि इसमें फायदा है। बहुत बार ऐसा भी होता है कि हम अभ्यास में कोई न कोई अभिलाषा रखकर बैठे होते हैं, अंदर ख्याल जुड़ जाता है, शब्द रूप गुरु प्रकट हो जाते हैं। कई बार प्रेमी अंदर सवाल भी कर देते हैं और प्यार के वश में कभी–कभी गुरु हामी भी भर देते हैं। जब बाद में गुरु देखते हैं कि इसमें सेवक का फायदा नहीं तो वे उसे वह वस्तु नहीं देते। गुरु हमें वही वस्तु देंगे जिसमें हमारा फायदा है।

सतगुरु के दिल में अपने प्यारे बच्चों के लिए हजारों माता–पिता जैसा प्यार होता है। हम दुखी हैं या सुखी हैं, बीमारी का भुगतान कर रहे हैं या बेरोजगारी का भुगतान कर रहे हैं, यह हम अपने ही कर्मों का भुगतान कर रहे हैं। सतगुरु इसमें भी हमारी मुनासिब मदद करते हैं अगर हम भजन–सिमरन करते हैं तो हम खुद ही देख सकते हैं।

भागवत पुराण में कथा आती है कि एक बकरी झरने पर पानी पीने चली गई। झरने का पानी ऊँची जगह से गिरकर आवाज कर रहा था, बकरी वापिस आ गई कि जब यह आवाज रूक जाएगी मैं फिर पानी पी लूंगी। इतने में वहाँ एक हाथी आया, वह बार–बार बकरी को जाते हुए देखकर कहने लगा, ''तू जाती है फिर झरने से वापिस आ जाती है।'' बकरी ने कहा, ''जब यह आवाज बंद हो जाएगी, मैं फिर पानी पीऊंगी।'' हाथी ने कहा, ''यह आवाज तो बंद नहीं होगी, तूने जब भी पानी पीना है, आवाज में ही पानी पीना पड़ेगा।''

इसलिए सतगुरु हमें वचन से समझाते हैं, हिदायत करते हैं और कई बार अंदर से चेतावनी भी देते हैं कि तुझसे किसी और का कर्म नहीं भुगतवाया जा रहा, यह तेरा अपना ही कर्म है, इसे प्यार से भोग ले। हमारे अच्छे और बुरे कर्मों की आवाज तो होती ही रहनी है। आप यह न सोचें कि जब ये आवाज बंद हो जाएगी फिर भजन कर लेंगे। जितने दिन हमारी जिंदगी है, हमें उतने दिन इन दुखों–सुखों में ही भजन–सिमरन करना पड़ेगा। हम देह में अपने कर्मों का भुगतान करने के लिए ही बैठे हैं अगर हमारे कर्म न हों तो हम देह में आते ही क्यों? गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

सूहटु पजिरि परेम कै बोलै बोलणहारु।।
सचु चुगै अंमृतु पीऐ उडै त एका वार।।

तन पिंजरा है, आत्मा तोता है। इस पिंजरे से प्यार करके यह कभी दुख की, कभी सुख की अनेकों प्रकार की बोली बोलता है। अगर इन

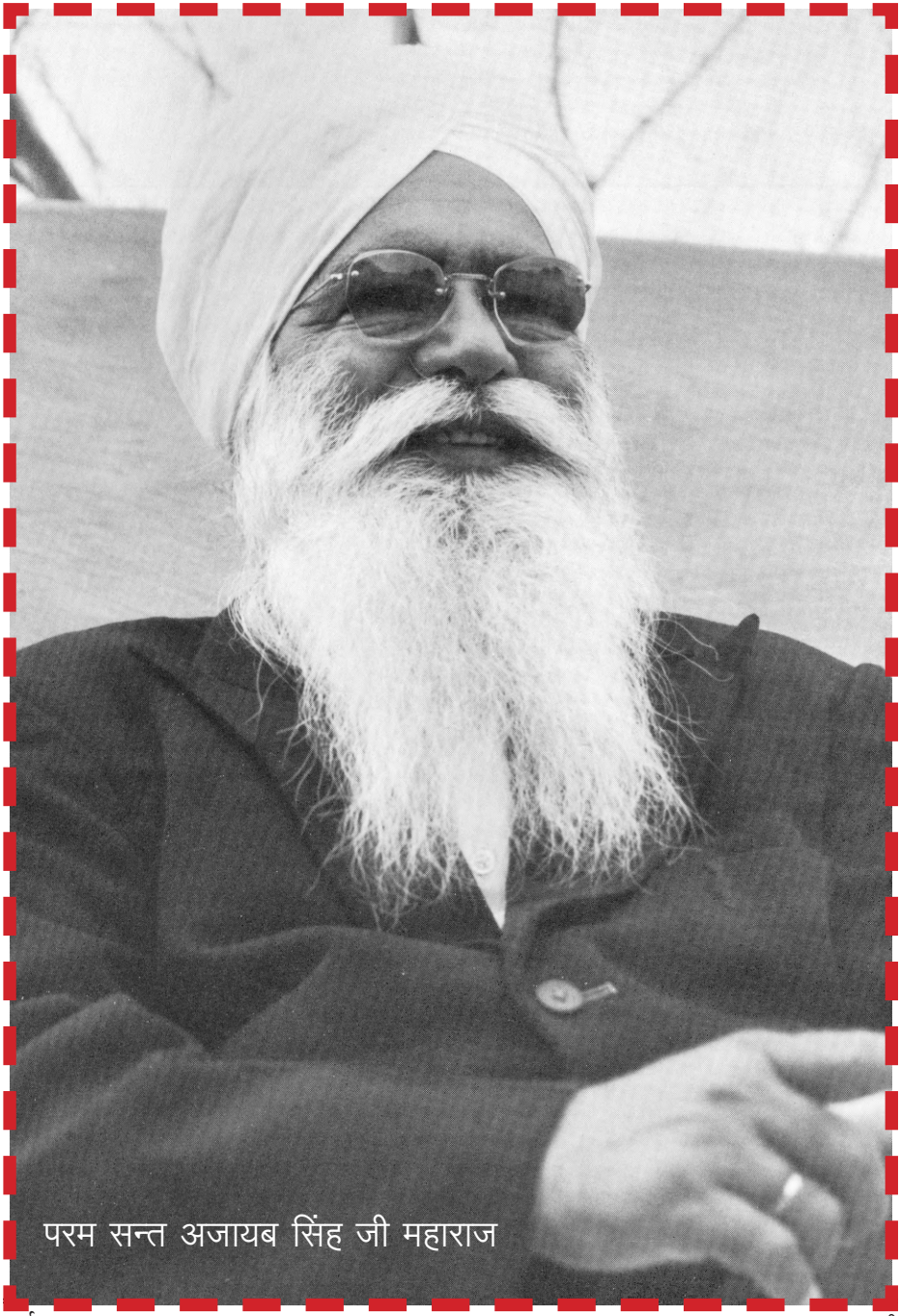

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

दुखों–सुखों से ऊपर उठकर मालिक का भाणा मानकर उस अनहद शब्द का चोगा चुगे, भजन–सिमरन करे तो एक ही बार संसार में आना पड़ता है, दोबारा इस दुखों की नगरी में नहीं आना पड़ेगा।

एक प्रेमी: *क्या यह ठीक है कि सिमरन करते वक्त हम गुरु को याद रखें या कोई और मकसद रखकर सिमरन करना चाहिए?*

बाबा जी: हाँ भई, बड़ा अच्छा सवाल है। मैं आशा करता हूँ कि हर सतसंगी को अपने दिल पर यह सवाल लिख लेना चाहिए क्योंकि मन अंदर ही हर सतसंगी के अंदर ऐसे ख्याल बिठा देता है। सबसे पहले सतसंगी का दिल मजबूत होना चाहिए। दिल फौलाद की तरह हो तभी भजन किया जा सकता है क्योंकि स्थूल दुनिया से ज्यादा संघर्ष सूक्ष्म दुनिया में करना पड़ता है। वहाँ विरोधी ताकतें आकर डराती हैं और लोभ भी देती हैं अगर कमजोर मन वाला अंदर जाएगा तो वह डरकर हट जाएगा या लोभ में आ जाएगा। कबीर साहब ने कहा थाः

साकनी डाकनी बहु किलकारे।

आज एक हिन्दुस्तानी भाई दर्शनों में आया, वह मुझसे कहने लगा कि जब मैं तीन बजे उठता हूँ तो मुझे डर लगता है। मैंने उससे पूछा अगर तू उस समय सो जाए तो वह कहने लगा कि फिर डर नहीं लगता। फिर मैंने उससे पूछा, ''अगर उस समय सिनेमा में जाना हो या टेलिविजन देखना हो?'' तो कहने लगा कि फिर डर नहीं लगता सिर्फ भजन करता हूँ तो डर लगता है। मैंने कहा कि ऐसे आदमी कमजोर दिल के होते हैं, जब तुझे गुरु पर भरोसा नहीं तो तेरे आगे डर ने ही आना है। आप यही मकसद लेकर बैठें कि हम अंदर जाएंगे, गुरु को प्रकट करेंगे, गुरु से बात करेंगे। अगर आप गुरु को याद ही नहीं करेंगे, गुरु को प्रकट करने के लिए नहीं बैठेंगे तो भक्ति किसकी कर रहे हैं? गुरु अर्जुनेदव जी कहते हैंः

गुरु गुरु गुरु कर मन मोर गुरु बिना मैं नाहीं होर।

आप चाहे बस में सफर कर रहे हैं, चाहे स्नान कर रहे हैं, चाहे कितना भी जरूरी काम कर रहे हैं, गुरु का ख्याल सतसंगी की आँखों के सामने होना चाहिए। सिमरन गुरु का दिया हुआ ही है फिर न दुनिया की वस्तु प्राप्त होनी है और न आपका भजन ही बनना है। आप जो समय लगाएंगे, वह बेकार ही जाएगा।

मैं अपने पिछले गाँव की घटना बताया करता हूँ, यह मैंने पहले भी कई बार बताई है। एक आदमी को पैसे की जरूरत थी, वह पैसों का ख्याल लेकर रोज भजन किया करे। एक दिन ऐसी मौज हुई कि उसे अंदर बैठे हुए नोट ही नोट दिखाई दिए कि मेरा ट्रंक नोटों से भरा हुआ है, उसने अपनी लड़की को आवाज लगाई कि तू ट्रंक खोलकर देख, यह नोटों से भरा हुआ है अगर मैंने आँखें खोली तो नोट नहीं रहेंगे।

लड़की ने जाकर ट्रंक खोला तो उसमें से क्या निकलना था। उसने मेरे पास आकर सारी बात बताई। मैंने उससे कहा, ''देख भई प्यारेया, अगर हम सपने में लड्डू या पेड़े खा लें तो क्या मुँह मीठा हो जाएगा? तू अपना ख्याल इस तरफ लेकर बैठा तभी तेरे ख्याल ने यह खेल बनाया

लेकिन यह सच्चाई नहीं थी।'' भजन दुनियावी चीजें अंदर से निकालने के लिए किया जाता है। जहाँ हमारा हृदय दुनिया के पदार्थों के लिए कल्प रहा है, वह जगह गुरु का सिमरन ले ले।

अभ्यास में बैठने से पहले सतसंगी को मैं हमेशा तीन–चार चीजें याद करवाता रहता हूँ। अभ्यासी को अभ्यास बोझ नहीं समझना चाहिए, प्रेम–प्यार से करना चाहिए। दुनिया के संकल्प–विकल्प समुंद्र की लहरों की तरह अंदर उठ रहे हैं, उन्हें शान्त कर लें, उन्हें भूल जाएं फिर आप सिमरन करें। गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि ऐसा एक पल का सिमरन बड़ी महानता रखेगा, आप इस तरह करके देखें।

महाराज सावन सिंह जी की एक सतसंगिन भागवंती मुक्तसर से थी। उसके दिल में तड़प उठी की भजन करके आऊं। वह मेरे पास आई और कहने लगी कि मैं तभी वापिस जाऊंगी जब मेरा पर्दा खुल जाएगा। मैंने उससे कहा, ''धन्यवाद''। मेरे पास जो लड़कियां सेवा में रहती थी, मैंने उनसे कहा कि यह बुजुर्ग है, इसकी हमेशा सेवा करें। वे लड़कियां उसके कपड़े धोती और सेवा भी करती। भागवंती ने एक औरत का नाम लिया कि उसे बुलाओ जो यहाँ से दो मील दूरी पर रहती थी। भागवंती को बातें करने की बहुत आदत थी, जिसे वह बुलाना चाहती थी वह भी बहुत बातें करती थी। मैं उन्हें जानता था। मैंने उससे कहा कि तू अकेली ही बहुत बातें करती है अगर दूसरी को बुला लिया तो कैसे होगा। उसने तीन–चार दिन तो भजन किया, चौथे दिन कहने लगी कि मुझे मुक्तसर छोड़कर आएं। मैंने उससे कहा कि तेरे लड़के यहाँ छोड़ गए हैं अब हमारे लिए बहुत मुश्किल है कि तुझे कौन छोड़कर आए।

मैंने उससे पूछा, ''तू क्यों जाना चाहती है?'' उसने कहा कि मेरी आँखों के आगे मेरे बच्चे आ रहे हैं, घर का कारोबार आ रहा है। पहले तो मन ने उसे उछाला दिया कि जाकर भजन कर, पर्दा खोलकर आ। जब

भजन करने लगी तो घर के लोग उसकी आँखों के सामने कर दिए। तराजू का जो पलड़ा भारी है, वह नीचे झुकेगा। अगर वह गुरु का प्यार लेकर भजन पर बैठती कि मैंने गुरु सावन सिंह जी से मिलना है, गुरु को प्रकट करना है तो फिर गुरु ही उसके पास आते, वह डोलती नहीं।

महाराज कृपाल और परमात्मा सावन बहुत दयालु थे। कई बार जब भी कोई जिज्ञासु नामदान की विनती करता तो वे उसी समय नामदान दे देते थे। यह मेरे घर की ही घटना है, एक जिज्ञासु आया, महाराज जी ने मुझसे कहा कि तू इसे अभ्यास पर बिठा दे। मैं उसे ऊपर चौबारे में ले गया महाराज जी दूसरे चौबारे में आराम कर रहे थे। उसे बिठा दिया और मैं भी आँखें बंद करके बैठ गया, बस मेरे बैठने की देर थी। मेरे दरवाजे के सामने से सड़क जाती थी, वह उस सड़क पर चला गया। वह तकरीबन दो किलोमीटर चला गया होगा।

जब मैंने आँखें खोली तो वह नामलेवा वहाँ नहीं था। मैं बहुत परेशान हुआ कि कहीं महाराज जी तो उसे लेकर नहीं गए। मैंने बाहर आकर पूछा तो मुझे बताया गया कि वह इस तरफ गया है। मैं उसे वापिस लेकर आया कि भाई, तूने यह क्या किया? उसने कहा कि मुझे तो कुछ पता ही नहीं लगा, समझ ही नहीं आई। बस मैं घर के कारोबार से आया था, इन्होंने दया की और मैं उस दया को संभाल नहीं सका। अब आप देखें अगर वह गुरु का ख्याल लेकर बैठता कि मेरे ऊपर गुरु ने दया की है लेकिन दया को प्राप्त करते वक्त मन धोखा दे गया। मैंने पहले टूर पर रसल प्रकिन्स को भी यह वाक्या बताया था कि नामदान देते समय होशियार होकर नामदान देना है। अब जब हम नामदान की क्रिया करते हैं तो आमतौर पर पप्पू, गुरमेल आँखे बंद करके नहीं बैठते, उनकी ड्यूटी होती है।

प्यारेयो, जब भी अभ्यास पर बैठना है तो आपको पाँच पवित्र नाम अच्छी तरह से याद कर लेने चाहिए। जब याद करेंगे तो आपको पता होगा

कि ये पवित्र नाम मुझे गुरु ने दिए हैं, गुरु का ख्याल अपने आप ही आएगा। जब आपने दुनिया के संकल्प–विकल्प झाड़ू से बाहर निकाल दिए हैं फिर वहाँ गुरु है और आपका सिमरन है।

वैसे भी जब सुबह अभ्यास करते हैं तो कुछ प्रेमी आस–पास फिरते रहते हैं। शुरु–शुरु में प्रेमियों ने उठकर चारों तरफ देखना है कि सारे उठ तो नहीं गए। मैं अभ्यास में बिठाने से पहले बोला करता हूँ कि जब हम जाएंगे आपको आवाज देकर जाएंगे, आपको बैठे हुए छोड़कर नहीं जाएंगे। अब प्रेमी मेरी बात पर अमल करते हैं, आराम से बैठे रहते हैं। मुझे खुशी है कि अब सतसंगियों को बैठने की काफी आदत है। मेरा प्रोग्राम इस तरह है कि सतसंग बेशक मिस हो जाए लेकिन मैं किसी का अभ्यास मिस करके खुश नहीं होता।

मन लागत लागत लागत है।

हम जिस काम को रोज–रोज करते हैं, उसमें महारत हो जाती है। अब प्रेमी टिक कर सिमरन करते हैं, ध्यान लगाते हैं। मैं जब चार–पाँच मिनट पहले उठकर देखता हूँ तो मुझे बहुत खुशी होती है कि मेरे प्यारे बच्चे खुश होकर बैठे हैं। कुछ सतसंगी ऐसे भी हैं जिनके चेहरे पर बहुत चमकता तेज होता है।

मैं बताया करता हूँ कि सन्तमत सच्चाई और विश्वास पर खड़ा है, यह कोई परियों की कहानी नहीं। आज तक परम सन्तों ने जो कुछ भी बयान किया है, वह बिल्कुल सोलह आने सच और सही है। हमें भी प्यार और भरोसे से अपना भजन–सिमरन करना चाहिए। सबसे बेहतर वही आत्माएं रहती हैं जो गुरु के जीवन काल में ही अपने अंदर शब्द की धारा को चालू कर लेती हैं, गुरु को प्रकट कर लेती हैं। गुरु को भी खुशी होती है कि मेरे इतने सेवक तो पास हो चुके हैं।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से

लोभी आदमी

एक कमाई वाले महात्मा प्रेमियों के बुलावे पर बाहर गए। उस जमाने में आज की तरह गाड़ियों–बसों के साधन नहीं थे, आमतौर पर महात्मा पैदल ही यात्रा करते थे। महात्मा ने अपने पल्ले में तीन पराठें बाँध लिए। महात्मा को रास्ते में एक लोभी आदमी मिला वह भी उनके साथ चल पड़ा। उस आदमी के दिल में विचार आया कि महात्मा के पास कुछ पैसे तो जरूर होंगे। जब थोड़ा आगे गए, रास्ते में नहर आई, महात्मा ने कहा, ''भाई मुझे जंगल दिशा में जाना है तुम मेरे सामान का ख्याल रखना।'' लोभी आदमी ने कहा, ''अच्छा जी मैं आपके सामान की रखवाली करूंगा।''

महात्मा जब दूर चले गए तो उस लोभी आदमी ने पैसों के लालच में महात्मा के सामान की तलाशी ली लेकिन पैसे नहीं मिले सिर्फ तीन परांठे ही थे, उसमें से उस लोभी आदमी ने एक परांठा खा लिया। महात्मा ने वापिस आकर अपना सामान देखा तो उन्हें मालूम हुआ कि इसने एक परांठा खा लिया है। महात्मा ने लोभी आदमी से पूछा, ''भाई, तूने इसमें से एक परांठा खाया है?'' उसने कहा, ''नहीं जी।''

महात्मा ने उस लोभी आदमी से कहा, ''तू उस मालिक को याद कर जिसने तुझे पैदा किया है, उसकी सौगंध खाकर कह कि तूने परांठा नहीं खाया।'' लोभी आदमी ने कहा, ''मैं उस परमात्मा की सौगंध खाकर कहता हूँ कि मैंने परांठा नहीं खाया।'' महात्मा चुप रहे, महात्मा ने बचे हुए दो परांठों में से एक परांठा खुद खा लिया और दूसरा उसे खिला दिया।

आगे चलकर दोनों एक नदी पार करने लगे, लोभी उस नदी में डूबने लगा। महात्मा ने उससे कहा, ''देख भई सज्जना, जिस परमात्मा ने हमें पैदा किया है उसे याद कर वह परमात्मा हर इंसान की मदद करता है।''

लोभी ने परमात्मा को याद किया और वे डूबने से बच गए। महात्मा ने कहा, ''देख, उस परमात्मा ने हमारी कितनी मदद की है, हमें पानी में डूबने से बचाया है, तू उस परमात्मा को साक्षी रखकर कह कि तूने परांठा नहीं खाया।'' उसने कहा, ''मैं उसी परमात्मा की सौगंध खाकर कहता हूँ कि मैंने परांठा नहीं खाया।'' महात्मा चुप रहे।

जब आगे गए तो जंगल में आग लगी हुई थी, जिससे बचना नामुमकिन था। महात्मा ने कहा, ''देख भई, उस परमात्मा को याद कर जिसने हमें पैदा किया है, वही हमें इस आग से बचा सकता है।'' लोभी आदमी ने परमात्मा को याद किया, परमात्मा ने रक्षा की। जब उस जंगल से आगे निकल आए तो महात्मा कहने लगे, ''देख भई, परमात्मा ने हमारे ऊपर बहुत दया–मेहर की है, हमें आग से बचाया है। तू उसी परमात्मा की सौगंध खाकर कह कि तूने परांठा नहीं खाया।'' लोभी आदमी ने फिर उसी तरह सौगंध खा ली, हम दुनियादार ऐसे ही हैं।

अगरचे अल्लाह सबका अन्नदाता है फिर भी हर शख्स अल्लाह को पतियाता है।
अल्लाह का कोई शुक्रगुजार नहीं, अल्लाह सिर्फ कसम खाने के काम आता है।।

दुनिया परमात्मा को सिर्फ कसम खाने के लिए ही याद करती है। महात्मा बहुत समझदार और कमाई वाले थे। उन्होंने सोचा कि जब तक यह झूठ बोलना नहीं छोड़ेगा, यह परमात्मा के दरबार नहीं पहुँच सकेगा, उनका मकसद सिर्फ झूठ छुड़वाना ही था। महात्मा ने अपनी माया शक्ति से वहाँ पर काफी सोना इत्यादि इकट्ठा करके उसकी तीन ढेरियां बनाकर लोभी आदमी से कहा, ''एक ढेरी मेरी, दूसरी ढेरी तेरी और तीसरी ढेरी उसकी जिसने परांठा खाया था।'' लोभी ने कहा, ''जिस परमात्मा ने पैदा किया है, हमारी पानी, आग से रक्षा की, मैं उसकी कसम खाकर कहता हूँ कि वह परांठा मैंने ही खाया था।'' महात्मा ने कहा कि तू पहले क्यों नहीं माना। महात्मा का भाव तो समझाने का ही था, महात्मा तो माफ करने के लिए ही आते हैं। सच आखिर सच होता है। ***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को अभ्यास में बिठाने से पहले

परमात्मा का प्यार

16 जनवरी 1986 मुम्बई

परमात्मा ने अपनी अपार दया करके हमें बड़ा सुहावना मौका इंसानी जामें का दिया है। हम इंसानी जामें में आकर तभी फायदा उठा सकते हैं अगर हम परमात्मा की भक्ति करें। वह परमात्मा हमारे अंदर है, हम अंदर जाकर परमात्मा से मिलें। जिन महात्माओं ने आत्मा और परमात्मा के बारे में खोज की है, उनके अंदर बहुत अटल विश्वास होता है। वे इस तरह की सहज अवस्था प्राप्त कर लेते हैं कि दुनिया की मान–बड़ाई उनकी खुशी का कारण नहीं बनती और दुनिया की निन्दा उनकी गमी का कारण नहीं बनती। उन्हें अटल भरोसा होता है कि परमात्मा के हुक्म के बिना पत्ता तक नहीं हिलता। वे निडर हो जाते हैं, वे परमात्मा से ही डरते हैं क्योंकि परमात्मा उनका मालिक होता है, वे दुनिया को बड़ा नहीं परमात्मा को बड़ा समझते हैं। वे परमात्मा के नाम पर सब कुछ प्यार से सह लेते हैं।

इंसानी जामे की कीमत भी उन्हीं महात्माओं को होती है जो अंदर जाकर परमात्मा से मिल लेते हैं। कबीर साहब कहते हैं, ''मानस जन्म कीमती हीरा है यह बार–बार नहीं मिलता।'' जिस तरह वृक्ष से फल पक कर जमीन पर आ जाता है और फिर वह डाली से नहीं लगता इसी तरह अगर हम एक बार इंसानी जामें का मौका खो देते हैं तो यह मौका बार–बार नहीं मिलता।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि हम दिन को खेल में बर्बाद कर देते हैं, रात को सोकर बर्बाद कर देते हैं। इंसानी जामा हीरा है, विषय–विकार कौड़ियां हैं। हम कौड़ियाँ प्राप्त करने के लिए ही इंसानी जामा खो कर चले जाते हैं। अगर दुनिया से प्राप्त करने वाली कोई कीमती चीज है जो

अमोलक है, मूल्य से नहीं मिलती, जिसे हम बाजार से खरीद नहीं सकते, खेतों में उगा नहीं सकते, किसी हुकूमत के बल से उसे प्राप्त नहीं कर सकते, वह परमात्मा की भक्ति और **परमात्मा का प्यार** है।

काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार ये पाँचों डाकू हर इंसान को बंदर की तरह नचा रहे हैं, हर आत्मा को अपने बस में कर रहे हैं। इनसे छूटने का उपाय 'शब्द–नाम' की भक्ति, गुरु की शरण है। लगातार गुरु का प्यार होने से हमारा संपर्क नाम के साथ हो जाता है। नाम प्रकट होने से ये पाँचों दुश्मन हमारा पीछा छोड़ देते हैं। सारी दुनिया सच्चे सुख, शान्ति और मान–बड़ाई की खातिर फिर रही है। दुनिया की मान–बड़ाई के पीछे बड़े दुख छिपे होते हैं। यह दुनिया मान–बड़ाई देते समय देर नहीं लगाती और छीनते समय भी देर नहीं लगाती लेकिन सच्चा सुख, सच्ची इज्जत परमात्मा के घर पहुँचकर ही है।

परमात्मा जिसे एक बार यह मान, आदर और प्यार बख्श देते हैं, उससे फिर नहीं छीनते। जिसने भक्ति का धन प्राप्त करना है, जरूरी है कि वह उन मालिक के प्यारों के साथ सच्चे दिल से प्यार करे लेकिन प्यार दुनिया को दिखाने का न हो। जिन्होंने भक्ति का धन प्राप्त किया है, वे परमात्मा के खास नुमाईंदे होते हैं, परमात्मा ने उन्हें अपना आर्शिवाद दिया होता है, परमात्मा वहाँ प्रकट होते हैं। स्वामी जी महाराज कहते हैंः

गुरु का ध्यान कर प्यारे। बिना इस के नहीं छुटना।।

जब तक हम सच्चे दिल से ऐसे महात्मा से प्यार नहीं करते तब तक हम मन–इन्द्रियों के घाट से ऊपर नहीं आ सकते। हमारे अंदर **परमात्मा का प्यार** जाग ही नहीं सकता। हमें जिस चीज की खोज है, जिसकी खातिर दुनिया जंगलों–पहाड़ों में फिरती है, मंदिर–मस्जिदों में चक्कर लगा रही है, वह वस्तु हमारे अंदर हमारी इंतजार में है अगर हमारे दिल में उनसे मिलने के लिए सच्चा प्यार, सच्ची तड़प है तो हमें बाहर से ख्याल हटाकर

अपने अंदर जाना चाहिए। हमें अंदर जिसकी खोज है वह जरूर मिल जाता है और हम शान्ति प्राप्त कर लेते हैं, हमारी भटकना मिट जाती है। जो मन हिरन की तरह हमें दुनिया के पदार्थों के पीछे लिए फिरता है, वह मन टिक जाता है और अपने घर बैठ जाता है। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैंः

राम नाामि मनु बेधिआ अवरु कि करी वीचारु।।

भीखा साहब कहते हैंः

भीखा बात अगम की कहन सुनन में नाहें।
जो जाणें सो कहे ना कहे सो जाणें नाहें।

यह तो करने का मसला है जो करते हैं वे प्राप्त कर लेते हैं, जो प्राप्त कर लेते हैं वे दुनिया को महात्मा बनकर नहीं दिखाते। वे दुनिया को किसी किस्म का पाखंड करके नहीं दिखाते, वे दिल से भी सच्चे हैं, बाहर से भी सच्चे हैं। इसलिए जो जानते हैं वे कहते नहीं, जो नहीं जानते वे जरूर लोगों में इश्तहारबाजी भी करते हैं कि आओ, हम आपको जोत दिखाएंगे, भगवान दिखाएंगे। भोली–भाली जनता करने पर जोर नहीं देती, सुनी–सुनाई बातों पर जोर देते हैं लेकिन जिन्होंने प्रैक्टिकल किया होता है वे मालिक के प्यारे कहते हैं ''देखो सज्जनों, सन्तमत अपने आपको सुधारने का मत है, यह प्रैक्टिकल करने का मत है, यह दिखावे का मत नहीं।'' कबीर साहब कहते हैंः

पाखंड में कुछ नाहीं साधो पाखंड में कुछ नाहीं रे।
पाखंडिया नर भोगे चौरासी खोज करो मन माहीं रे।।

आपने बाहर की किसी आवाज की तरफ तवज्जो नहीं देनी, मन को तीसरे तिल पर एकाग्र करना है। अभ्यास को बोझ नहीं समझना, अभ्यास को प्रेम–प्यार से करना है।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा भजन गाने पर दिया संदेश

नम्र होने का मौका

15 जनवरी 1991 मुम्बई

हाँ भई, हम अपने गुरुदेव के धन्यवादी हैं जिन्होंने हमें अपना यश करने का मौका दिया है। यह भी सन्तों ने हमें नम्र होने का एक मौका दिया है क्योंकि हम किसी भी तरीके से उनके आगे खड़े होकर उनकी तारीफ नहीं कर सकते। हम अपने पाप अंदर गुरु के आगे ही बयान कर सकते हैं बाहरी तौर पर हम कुछ नहीं कह सकते।

प्यारेयो, सन्तों ने भजन गाने का इतना सुंदर तरीका निकाला है जिसमें हम अपनी कमजोरी और जिंदगी को बड़े हिसाब, लहजे और वैराग्य से खोलकर सन्तों के आगे रख देते हैं और एक–एक करके अपनी कमजोरियां गुरु के आगे बयान कर देते हैं।

अक्सर देखने में यही आता है कि जिस दिन प्रेमी भजन बोलते हैं, मैं ज्यादा तो नहीं कहता लेकिन मैं जहाँ बैठा हूँ अगर वहाँ बैठकर उनकी आँखों की तरफ देखता हूँ तो ऐसा कोई प्रेमी नहीं जिसकी आँख से पानी न गिरता हो। जब हम भजन बोलते हैं तो हमारी जिंदगी का नजारा ही हमारी आँखों के आगे आता है और गुरु प्यार जागता है। हमारी आत्मा अंदर से लानत भी मारती है कि हम कितने कमजोर हैं और गुरु से कितने बेमुख हैं लेकिन फिर भी गुरु हम पर कितनी दया करते हैं।

कमजोर व्यक्ति ही ताकतवर के आगे पुकार करता है कि मेरी मदद करें, ताकतवर जरूर उसकी मदद करता है। हमारी आत्मा जन्म–जन्म से कमजोर है, हमारे गुरु जिन्होंने हमें नाम दिया है, वे बहुत शक्तिमान हैं। हम उनके आगे पुकार करते हैं कि वे हमारी मदद करें, वे मुनासिब मदद जरूर करते हैं।

हम दुनियादार लोग हैं, हम रूहानियत में गुरु से मदद नहीं माँगते बल्कि दुनियावी कामों में और दुनियावी जिंदगी में गुरु की मदद ढूंढते हैं। आप ठंडे दिल से सोचकर देखें अगर सन्त–सतगुरु दुनियावी काम करने के लिए आएं तो वे सेवक को किसी भी जन्म में अंदर नहीं ले जा सकते। परमात्मा ने संसार में उन्हें हमें इस झंझट से निकालने के लिए भेजा है। हम अजीब ही अक्ल के मालिक हैं, हम गुरु और शिष्य के रास्ते को समझ नहीं सकते।

हम भजनों द्वारा गुरु के आगे अपना आभार प्रकट करते हैं। हम परमात्मा की याद में बैठे हैं, उन्हें पुकार रहे हैं वे हर तरह से हमारी मदद करते हैं और हमारी पुकार सुनते हैं।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से

होली का प्रसाद

बाबा बिशनदास जी ने इस जिंदगी की तुलना होली के प्रसाद से की है। भारत में कुछ अमीर लोग **होली का प्रसाद** इस तरह का बनाते हैं जो देखने में तो अच्छा दिखता है लेकिन खाने पर मुँह का स्वाद कड़वा हो जाता है। खाने वाला सोचता है कि काश! उसने यह प्रसाद चखा ही न होता। लेकिन जिन लोगों ने यह प्रसाद नहीं चखा होता, वे सोचते हैं कि काश! उन्हें भी यह प्रसाद चखने का मौका मिलता।

छोडि जाइ तिस का स्त्रम करै।।
संगि सहाई तिसु परहरै।।

हम अपने परिवार, बच्चे, धन–दौलत, दुनियावी इज्जत और शोहरत के साथ लिपटे हुए हैं। इसके साथ हम यह भी घमंड करते हैं कि मैं अपने परिवार का बहुत ख्याल रखता हूँ, अपनी बिरादरी का सेवादार हूँ। हमने एक दिन इन्हें छोड़कर चले जाना है लेकिन हमें इस बात का जरा भी फिक्र नहीं कि इस संसार को छोड़कर जाने के बाद हमारा क्या होगा?

***

धन्य अजायब

16 पी.एस.आश्रम राजस्थान में सतसंग का कार्यक्रम
01, 02, 03, 04 व 05 अप्रैल 2026 का है

RNI No - RAJHIN/2003/9899

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज, 11 सितम्बर 1926